- भूमि की तैयारी मई–जून में कर लेनी चाहिए।
- नर्सरी में तैयार पौध मानसून के आगमन पर खेत में लगाना चाहिए। एक हेक्टेयर में लगभग 10 टन एफ. वाय.एम. का मिश्रण रोपण के पूर्व खेत में मिलाना चाहिए।

प्रत्यारोपण एवं न्यूनतम दूरी

खेत में 50 cm X 25 cm की दूरी पर कटिंग्स प्रत्यारोपित करना चाहिए।

मिश्रित कृषि/सहरोपण

चित्रक को अमरूद, आम, एवं नींबू के साथ उगाया जा सकता है। इसे खमेर, श्योनाक आदि प्रजातियों के साथ भी लगाया जा सकता है। समय–समय पर खरपतवार नियंत्रण जरूरी है।

सिंचाई

वर्षा ऋतु में सिंचाई की आवश्यकता नही होती है, किन्तु बाद में नवम्बर–दिसम्बर माह में प्रतिमाह 4–5 सिंचाई अति आवश्यक है।

रोग एवं कीट प्रबंधन

चित्रक की पत्तियों पर सेमी–लूपर लार्वा तथा बिहार हेयरी केटरपिर का प्रकोप अकसर पाया जाता है जो पत्तियाँ खा कर पौध वृद्धि को प्रभावित करते है। ये पौधे की कोपलो को भी खा जाते है। इनका उपचारण मालाथियोन का स्प्रे कर किया जा सकता है। मालाथियोन का 2 मि.ली/ली. स्प्रे हर 15 दिनों के अंदर करना चाहिए।

विदोहन प्रबंधन

प्रत्यारोपण के 10–12 महीनों बाद फसल प्राप्त की जा सकती है।

विदोहन उपरांत प्रबंधन

जून माह में जड़ो की कटाई करना चाहिए। कटाई उपरांत जड़ों को छाव में सुखाना चाहिए। जड निकालने से पूर्व खेत में अच्छी तरह सिंचाई करनी चाहिए। जड़ गहराई से निकालनी चाहिए। निकाली गई जड को अच्छी तरह प्रवाहित जल में धो कर, सुखाकर, छोटे–छोटे 5–7.5 से.मी. लम्बे टुकड़ों में काट लेना चाहिए। भंण्डारण से पूर्व जडों को अच्छी तरह सुखा लेना चाहिए। सूखी जड में 10–13 प्रतिशत नमी ही रहनी चाहिए। सुखाने के पश्चात जड़ों को वायुरूद्ध पोलीथीन थैलियो मे भंडारित किया जा सकता है।

रासायनिक संगठन

चित्रक में पीले रंग का क्रिस्टलीय कडवा तत्व प्लम्बैगिन पाया जाता है। प्लम्बैगिन की मात्रा शुष्क क्षेत्र मे पाई जाने वाली चित्रक में अधिक पायी जाती है।

उपज

शुष्क जडों की कुल उपज 12 से 18 क्विंटल प्रति हेक्टेयर अनुमानित है।

ई–चरक ऐप

- जड़ी बूटियों, सुगंधित औषधियाँ, कच्चे माल एवं इनसे संबंधित जानकारी के लिये ई–चरक (ई–मंच) का उपयोग करें।
- यह ऐप एंड्रोइड मोबाइल, प्ले–स्टोर एवं गूगल पर भी उपलब्ध है।

औषधीय पौधो की कृषि तकनीक, प्राथमिक प्रसंस्करण एवं विपणन संबंधी अधिक जानकारी के लिये संपर्क करे।

क्षेत्रीय संचालक

क्षेत्रीय–सह–सुविधा केन्द्र (मध्यक्षेत्र)

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, पोलीपाथर, जबलपुर–482008 (म.प्र.)

संपर्क: 0761–2665540, 9300481678, 9424658622 फैक्स: 0761–2661304

ई–मेल: rcfc_sfri817@rediffmail.com, sdfri@rediffmail.com

वेब: http://www.rcfccentral.org

चित्रक

(*Plumbago zeylanica*)

क्षेत्रीय-सह-सुविधा केन्द्र, मध्य क्षेत्र

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय, भारत सरकार

2019

चित्रक
(*Plumbago zeylanica*)

कुल : प्लम्बेजीनेसी
आयुर्वेदिक नाम : चित्रक
यूनानी नाम : चित्रा
हिन्दी नाम : चित्रा, चिरा, शीतराज
व्यापारिक नाम : चित्रक, चित्रकमूल
उपयोगी भाग : जड़ एवं दूधीय रस

औपचारिक/औषधीय उपयोग

चित्रक उष्णोत्पादक, स्तम्भक, कृमिनाशक, भूत्रवर्धक, गर्भनाशक, वातानुलोमक एवं कफनाशक प्रकृति का होता है। चित्रक की जड़ केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र को उद्दीप्त करती हैं। जड से प्राप्त तेल गठियावात, जोडों के दर्द एवं लकवा में उपयोगी होता है। पत्तियों से प्राप्त दूधीय रस का वाह्य प्रयोग त्वचा रोग में मददगार होता है।

आकारिकी संरचना

चित्रक बहुवर्षीय झाड़ी प्रजाति का पौधा है, जिसकी औसत ऊंचाई 1.5–2.0 मी. होती है। इसकी शाखाएं घनी एवं असंम्बद्ध होती है। इसकी अधिकांश वृद्धि वर्षा ऋतु में होती है, एवं पुष्पन के बाद इसकी वृद्धि नगण्य हो जाती है।

पत्तियां साधारण विपरीत क्रमविन्यास में लगी होती है जो 4–10 से.मी. लम्बी एवं 3–5 से.मी. चौडी होती है। पत्तियां चिकनी, चमकदार अण्डाकार-गोलाकार होती है। ताजी जड़ अंदर की तरफ फीके रंग की एवं सूखने पर लाल–भूरे रंग की हो जाती है। जड़ की बाहरी सतह भूरी एवं धारीनुमा होती है। गर्मी के दिनों में चित्रक की सारी पत्तियां झड़ जाती है किन्तु समुचित सिंचाई व्यवस्था में पत्तियां पौधों पर बनी रहती है। पौधे में सक्रिय वृद्धि अप्रेल माह में प्रारम्भ हो जाती है।

पुष्पीय लक्षण

पुष्प द्विलिंगी एवं सफेद रंग के होते है। बाहृयदलपुंज पुंगी की तरह होता है, जिसमें चिपचिपा द्रव्य स्त्रावित होता है। चित्रक तीन प्रकार का होता है जिसमें सफेद, लाल एवं नीला पुष्प विशिष्ठता दर्शाता है। सफेद चित्रक सबसे अधिक पाये जाने वाला प्रकार है तथा यह सामान्यतः आर्द्र स्थानो पर पाया जाता है। लाल चित्रक प्लम्बैंगो रोज़िया जबकि नीला चित्रक प्लम्बैंगो कैपेन्सिस कहलाता है। फल हरे रंग के चिपचिपे रोमयुक्त होते है तथा परिपक्वता पर भूरे रंग के हो जाते है। पुष्पन सितम्बर–नवम्बर माह में होता है जबकि फलन जनवरी से फरवरी माह में होता है।

वितरण

सामान्यतः चित्रक वनक्षेत्रों, कृषिक्षेत्रों, उद्यानो एवं खाली भूमियो पर पाया जाता है।

जलवायु एवं मृदा

चित्रक लाल कछारी, मुरमुरी, बलूई एवं उथली से, गहरी काली मिट्टी में उगाया जा सकता है। इसके लिए किसी विशिष्ठ मृदा की आवश्यकता नहीं होती है। फिर भी उत्तम फल प्राप्ति हेतु बलूई मिट्टी जिसमें कार्बनिक पदार्थ की प्रचुरता हो, अच्छी मानी जाती है। सामान्यतः प्राकृतिक अवस्था में चित्रक नमी एवं छायादार स्थानों पर उगता है।

प्रवर्द्धन

चित्रक आसानी से कटिंग्स एवं बीज द्वारा उगाया जा सकता है। तने से कटिंग हेतु 10–15 से.मी. की लम्बाई जिसमें कम से कम तीन संधिया (nodes) हों, आवश्यक है। कटिंग हेतु मार्च–अप्रैल का समय उपयुक्त पाया गया है।

कृषि तकनीक

नर्सरी तकनीक द्वारा पौध तैयार करना

नर्सरी में पौध उगाने हेतु मार्च–अप्रैल में (कम से कम चार माह पुराने पौधों से) कटिंग लगा कर जुलाई में रोपण किया जा सकता है। कटिंग को 500 PPM (Part per Milion) NAA (Nephtalene Acidic Acid) में डुबाकर लगाना चाहिए। इससे कटिंग में जड़ का विकास शीघ्रता से होता है।

पौधों से कटिंग प्राप्त करने हेतु आधार से काटना चाहिए जिसमें कम से कम तीन संधियां विद्यमान होनी चाहिए। तने के आधार से ली गई कटिंग में सफलता सर्वाधिक (80-100%) होती है तथा आधार से ऊपर की कटिंग्स मे सफलता कमशः घटती जाती है। आधार से अधिकतम सातवीं से नौवी संधि तक कटिंग्स ली जा सकती है।

मिस्ट चैम्बर में पूरे वर्ष कटिंग्स से पौधे आसानी से तैयार किये जा सकते है। खुले मे लगाई गई कटिंग में सफलता कम मिलती है तथा मरण प्रतिशत 70-90% तक बढ़ सकता है।

कटिंग काटने के 24 घण्टे के अंदर नर्सरी में लग जानी चाहिए।

नर्सरी में 10m X 1.0m आकार की क्यारी तैयार कर छांव वाली जगह पर लगाना चाहिए। नर्सरी मे वर्षा के मौसम मे धरातल से 15 से.मी. उठी हुई क्यारियॉ मे कटिंग्स लगानी चाहिए, जबकि सूखे मौसम मे क्यारियॉ जमीन की समह पर या थोड़ी नीचे बनाई जानी चाहिये। तीन संधियो में से एक संधि मिट्टी के अंदर एवं दो संधियॉ बाहर होनी चाहिए।

कटिंग्स को कतार में लगाना चाहिए। पौध से पौध की दूरी 5 से.मी. एवं कतार से कतार की दूरी 15 से.मी. होनी चाहिए।

कटिंग्स में एक माह के उपरांत जड़ें आना शुरू हो जाती है। तत्पश्चात इन्हे जुलाई में प्रत्यारोपित किया जा सकता है।

बीजो मे अंकुरण का प्रतिशत कम पाया जाता है। बीज से अच्छा अंकुरण प्राप्त करने हेतु बीज के माइक्रोपाइलर को घिस कर बुआई करना चाहिए। बीज के माइकोपायलर की घिसाई का कार्य अनुभवी व्यक्ति द्वारा ही किया जाना चाहिये, अन्यथा बीज भ्रूण को क्षति पहुँचने का अंदेशा रहता है। इन बीजों को मार्च में पॉलीबैग्स में जिनमें रेत, मिट्टी एवं एफ.वाय.एम. का मिश्रण बराबर मात्रा में हो, बोना चाहिए। इस तरह इन बीजों से 10–12 दिनों में लगभग 70 प्रतिशत अंकुरण प्राप्त किया जा सकता है।

रोपण सामग्री की आवश्यकता

एक हेक्टेयर में रोपण हेतु लगभग 80,000 जड़युक्त कटिंग्स अथवा बीज से तैयार पौधों की आवश्कता होती है।

कृषि क्षेत्र में रोपण

यह प्रजाति जल भराव स्थिति के लिए अति संवेदनशील होती है इसलिए भूमि में जल निकासी की उचित व्यवस्था होनी चाहिए। भूमि की अच्छी जुताई आवश्यक है।